बौद्ध धर्म–मनुष्य सृष्टि रूपी कल्पवृक्ष का तीसरा धर्म

यह मनुष्य सृष्टि रूपी कल्पवृक्ष एक अनोखा वृक्ष है; क्योंकि इसका बीज परमपिता परमात्मा शिव नीचे इस सृष्टि पर नहीं, अपितु ऊपर शांतिधाम के रहवासी हैं। हम मनुष्य आत्माएँ भी उसी धाम से आकर इस धरती रूपी रंगमंच पर शरीर रूपी वस्त्र धारण कर 5000 वर्ष के चतुर्युगी सृष्टि–चक्र में अलग–2 समय पर अलग–2 भूमिकाएँ अदा करती हैं। 1 से 84 जन्म लेती हैं और पावन से पतित बनती रहती हैं। चूँकि निराकार परमपिता शिव जन्म–मरण के चक्र में नहीं आते हैं, सदा पावन हैं और इस मनुष्य सृष्टि रूपी कल्पवृक्ष के बीज हैं, इसलिए उनमें इस सृष्टि के आदि, मध्य और अंत का ज्ञान समाया हुआ है, जो वे इस नाटक के अंत में अर्थात् पुरुषोत्तम संगमयुग पर प्रजापिता ब्रह्मा में परकाया प्रवेश कर हम पतित मनुष्यात्माओं को देते हैं और राजयोग के द्वारा पावन बनाते हैं। वे बता रहे हैं कि किस प्रकार इस सृष्टि–चक्र के आदि में अर्थात् सतयुग और त्रेतायुग में एक धर्म अर्थात् आदि सनातन देवी–देवता धर्म था और हम सभी मर्यादा पुरुषोत्तम देवी–देवताएँ थे। 2500 वर्ष पूर्व, द्वापरयुग में सबसे पहले पैगंबर इब्राहिम द्वारा इस्लाम धर्म की, फिर महात्मा बुद्ध द्वारा बौद्ध धर्म की और फिर ईसा मसीहा द्वारा ईसाई धर्म की स्थापना की गई।

जिस प्रकार परमपिता परमात्मा शिव संगमयुग पर परकाया प्रवेश करते हैं, उसी प्रकार अन्य धर्मों के धर्मपिता भी परकाया प्रवेश करते हैं; किंतु परमात्मा जन्म–मरण के चक्र से न्यारा है और अन्य धर्मपिताओं की आत्माएँ धर्म स्थापन करने के बाद पुनर्जन्म लेते हैं। जैसे आज से लगभग 2250 वर्ष पहले महात्मा बुद्ध की आत्मा परमधाम से आकर सिद्धार्थ नामक शरीरधारी के तन में प्रवेश कर बौद्ध धर्म की स्थापना करती है। वह जिसमें प्रवेश करती है, वो आत्मा तो पहले से ही इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर अनेक जन्म पार्ट बजा चुकी होती है। महात्मा बुद्ध की आत्मा जिस सिद्धार्थ के शरीर में प्रवेश करती है, उसे बौद्ध धर्म की आधारमूर्त आत्मा कहा जाता है, जबकि सिद्धार्थ के पिता शुद्धोधन को उस धर्म की बीजरूप आत्मा कहा जाएगा। वह बीज–रूप आत्मा अपने जीवनकाल में अपने पुत्र के शरीर द्वारा स्थापित धर्म को अंगीकार नहीं करती है; लेकिन अगला जन्म बौद्धी के रूप में ही लेती है। इस बेहद के ड्रामा का यह नियम है कि जो भी आत्मा परमधाम से इस सृष्टि पर आकर जन्म लेती है, वह पहले जन्म में दुख–अशांति का अनुभव नहीं करती है, इसलिए नए धर्म की स्थापना में जो भी बाधाएँ उत्पन्न होती हैं, उनका सामना ऊपर से आने वाली महात्मा बुद्ध की आत्मा नहीं, अपितु सिद्धार्थ की आत्मा करती है।

शरीर छोड़ने के बाद महात्मा बुद्ध और सिद्धार्थ, दोनों की आत्माएँ अलग–2 नाम एव रूप में, अलग–2 स्थानों पर जन्म लेती है; किंतु दोनों ही बौद्धी धर्म की सहयोगी बनती हैं। इस प्रकार, पुनर्जन्म लेते–2 कलियुग के अंत में अन्य आत्माओं की भाँति दोनों ही पतित और विकारी बन जाती हैं। जब पुरुषोत्तम संगमयुग परमपिता परमात्मा आकर ईश्वरीय परिवार की स्थापना करते हैं, तो सिद्धार्थ और उनके पिता शुद्धोधन की आत्मा तो ब्रह्माकुमार या कुमारी बनकर ईश्वरीय ज्ञान को स्वीकार कर लेती हैं; किंतु महात्मा बुद्ध की आत्मा संगमयुग के लगभग अंतिम समय तक बौद्ध धर्म की पालना करती रहती है। जब संगमयुग के अंत में महाभारी महाभारत युद्ध की शुरूआत होती है तो महात्मा बुद्ध की आत्मा भी परमपिता

परमात्मा शिव से सत्य ज्ञान की अंचली लेकर अपने धर्म के सभी अनुयायियों को भारत में भगवान के दिव्य अवतरण से अवगत कराती हैं।

बौद्ध धर्म की स्थापना तो भारत में हुई थी; किंतु यह धर्म भारत में अधिक समय तक पनप नहीं सका। इसका मुख्य कारण था, परमात्मा तथा देवी–देवताओं के संबंध में इसका मौन। इस धर्म में आत्मा–परमात्मा दोनों के संबंध में कुछ भी नहीं कहा गया है। इसका विकास भारत की पूर्वी दिशा में स्थित देशों में हुआ। आरंभ में बौद्ध विहारों में केवल पुरुष भिक्षु ही रहते थे; किंतु बाद में, जब इन विहारों में स्त्री और पुरुष भिक्षु (संन्यासी) एक साथ रहने लगे, तब इस धर्म में नैतिक पतन प्रारंभ हो गया और भारत में इसका पतन आरंभ हो गया। इसके अतिरिक्त, बौद्ध धर्म की एक और विशेषता है–अहिंसा, किंतु इस अहिंसा के कारण ही मुट्ठी भर विदेशी आक्रमणकारियों ने नालंदा और तक्षशिला जैसे अति प्राचीन एवं प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों को कुछ ही समय में नष्ट–भ्रष्ट कर दिया।

अब इस संगमयुग पर परमपिता परमात्मा शिव आकर हमें सच्ची अहिंसा सिखाते हैं, हमें डबल अहिंसक बनाते हैं– एक तो जो क्रोध रूपी हिंसा नहीं करते और दूसरे जो काम विकार रूपी हिंसा भी नहीं करते। साथ ही, परमपिता परमात्मा शिव स्वयं इस भारत भूमि पर अवतरित होकर दो साधारण व्यक्तियों (प्रजापिता ब्रह्मा एवं जगदम्बा) द्वारा पवित्र प्रवृत्तिमार्ग स्थापित कर हमें घर–गृहस्थ में रहते हुए सच्ची पवित्रता सिखाते हैं–संन्यासियों वाली कायरतापूर्ण पवित्रता नहीं–जिससे कि हम नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी बन सकें। सर्व धर्मों के पिता निराकार परमपिता परमात्मा शिव इस संगमयुग पर आकर हमें अपने चौरासी जन्मों की कहानी तथा देवता धर्म सहित सभी मुख्य धर्मों की स्थापना, पालना और विनाशकी कहानी बताते हैं तथा प्रायःलोप हुए आदि सनातन देवी–देवता धर्म की पुनः सैपलिंग लगाते हैं।

संबंधित मुरली प्वाइंट्सः–

1.बाप है मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ का बीज रूप। सत्य है। वह कभी विनाश नहीं होता। इनको उल्टा झाड़ कहते हैं। (मु. 3.7.04 पृ.3 आदि)

2.कलकत्ते वाला बड़ कइयों ने देखा नहीं होगा। बहुत बड़ा झाड़ है। अब उनका फाउण्डेशन सारा सड़ गया है। बाकी झाड़ खड़ा है। यह भी ऐसे है। देवता धर्म का फाउण्डेशन है नहीं। (मनुष्य सृष्टि रूपी) झाड़ की भी अब जड़जड़ीभूत अवस्था है। (मु. 27.7.91 पृ.2 अंत)

3.बुद्ध की आत्मा ने प्रवेश किया, बुद्ध धर्म पहले तो होता नहीं। ज़रूर यहाँ के कोई मनुष्य में प्रवेश करेंगे। फिर गर्भ में तो ज़रूर जाएँगे। बुद्ध धर्म एक ने ही स्थापन किया फिर उनके पीछे और आते गए। फिर वृद्धि होती गई। जब लाखों हो जाते हैं तो फिर राजाई चलती है। बौद्धियों का भी राज्य था। बाप समझाते हैं, यह सब पीछे आते हैं। (मु. 12.3.99 पृ.2 मध्य)

ओम्शांति